



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2020; 1(29): 177-178

© 2020 NJHSR

www.sanskritarticle.com

डॉ० आनन्द पाठक

प्राचार्य

आदर्श महाविद्यालय,

हरदुआ (नवाबगंज)

डॉ० राका शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर

संस्कृत-विभाग,

एन.के.बी.एम.जी. कॉलेज, चंदौसी

Correspondence:

डॉ० राका शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर

संस्कृत-विभाग,

एन.के.बी.एम.जी. कॉलेज, चंदौसी

डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकर की कृतियों पर पुराने ग्रन्थों का प्रभाव

डॉ० आनन्द पाठक, डॉ० राका शर्मा

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20341698>

डॉ० वर्णेकर जी ने प्राचीन संस्कृत साहित्य का अतीव गहनता के साथ अध्ययन किया है इसलिए उनकी कृतियों के अनेक अंशो पर पुराने ग्रन्थों का प्रभाव अनायास ही पड़ता हुआ दिखाई देता है-

"शिवराज्योदयम्" के निम्न श्लोक पर -

वाक् सुनृता कामदुधैव धेनुः सा शारदा मंगलदेवता वा।

सात्यन्तसिद्धिः सकलार्यदात्री सैकापरं कर्मणकर्मलोके॥¹

"उत्तररामचरितम्" के निम्न श्लोक का प्रभाव है -

कामान् दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं कीर्तिं सूते दुष्कृतं या हिनस्ति।

तां चाप्येतां मातरं मङ्गलानां धेनुः धीराः सूनृतां वाचमाहुः॥²

सह्याद्रिवर्णन में प्रयुक्त निम्न श्लोक पर -

सह्याद्रिपाबाणकठोरकायान् सह्यात्मजान् सह्यसमानवर्णान्।

वृद्धान् वयस्यान् पथि पुंजितास्तान् पपौ निमेषालसलोचनाभ्याम् ॥³

रघुवंश के निम्न श्लोक का प्रभाव देखा जा सकता है -

वसिष्ठधेनोरनुयायिनं तमात्यर्तमानं वनिता वनान्तात् ।

पपौ निमेषालसपक्ष्मपंक्तिरूपोषिताभ्यामिव लोचनाभ्याम्॥⁴

मुस्तफाखान के भाषण में द्विधाक्रमण की सूचना के प्रसंग में प्रयुक्त इस श्लोक पर -

द्विधा कृच्छ्रमभिप्रपन्नः यथा तथाऽस्मद्रिपुरप्युपेतु।

जिगीषवो नीतिविदः सदैव शठेषु शाठ्यं प्रतियोजयन्ति॥⁵

किरातार्जुनीयम् के निम्न श्लोक का प्रभाव स्पष्ट है -

ब्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।

प्रविश्य हि व्रन्ति शठास्तथाविधानसंवृता न्निशिता इवेषवः ॥⁶

जीजामाता द्वारा शिवाजी के हितप्रबोध वर्णन में प्रयुक्त निम्न श्लोक पर -

ईशाधिवास्यं सकलं हि तत्रत् चराचरं गोचरमत्र यद्यत् ।

त्यक्तेन तेनैव न भुञ्जते ये चौरा हि ते तान् खलु दण्ड्यत्वन् ॥⁷

ईशावास्योपनिषद् के निम्न श्लोक का प्रभाव है -

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्विद् धनम्॥⁸

भारतमाता के यशोगान वर्णन में प्रयुक्त श्लोक पर -

रसैः सान्द्र काव्यं जगति शिरसा धार्यमितरैः
सुखप्राप्यं स्वर्णं नृपतिगणयाच्चाभिरिह वा।
चरित्रं शिक्षेरन् द्विजजन - सकाशात् स्वकमिति
श्रुतो दिङ्नागैस्ते जननि । सुयशो - दुन्दुभि रवः॥⁹

मनुस्मृति के निम्न श्लोक का प्रभाव है -

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वस्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥¹⁰

काशीवर्णन में प्रयुक्त निम्न श्लोक पर -

न तच्छास्त्रं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नाऽसौ धर्मो महामान्यो यः काश्यां न विराजते॥¹¹

नाट्यशास्त्र के निम्न श्लोक का प्रभाव है -

न तज्ज्ञानां न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगे न तत् कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते॥¹²

शहाजी द्वारा जीजा के भाषणस्तवन में प्रयुक्त श्लोक पर -

भाग्यवानिह न कोऽपि दृश्यते मादृशः सदृशदारसंग्रही ।
काव्यसम्मिततयोपदिश्यते कान्तया य उचितोचितं नयम्॥¹³

काव्यप्रकाश के निम्न श्लोक का प्रभाव है -

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥¹⁴

"ग्रामगीतामृतम्" के निम्न श्लोकों पर -

न जायते नो म्रियते यश्चीतन्य-धनः भुः ।
पूजकैरवताराणां स स्मर्तव्योऽन्तरात्मनि ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
देवावताराः संजाताः धर्मसंस्थापनाय च ॥
विहाय वसनं जीर्णं नवीनं गृह्यते तथा ।
विमुच्य मरणाद् देहः देहिना गृह्यते नवः ॥¹⁵

"श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों का प्रभाव है।¹⁶

"ग्रामगीतामृतम्" के निम्न श्लोक पर -

धर्मं चर ब्रूहि सत्यम्, इति शास्त्रोपदेशनम्।
दैव सिद्धान्त - सत्यत्वे स्यान्निरर्थं प्रजल्पितम्॥¹⁷

तैत्तिरीयोपनिषद् के -

सत्यं वद । धर्मं चर । आदि मन्त्र का प्रभाव स्पष्ट है।¹⁸

"स्वातंत्र्यवीरशतकम्" के निम्न श्लोक पर -

नारायणासक्तसुतारिभुतं हिरण्यपूर्वकशिप मदान्धम् ।
उरोविदारं प्रविदारयन्तो नृसिंहमूर्तेर्नखरा जयन्तु ॥¹⁹

शिशुपालवधम् के निम्न श्लोक का प्रभाव है -

सटाकच्छटाभिन्नघनेन विभ्रता नृसिंह सहमितनु तनुं त्वया।
समुग्धकान्तास्त्र नसंगभंगुरेरूदोविदारं प्रतियरकरे नखैः॥²⁰
प्राचीन ग्रन्थकारों का यह प्रभाव उनकी शैली को अर्थगौरव से मण्डित कर देता है।

पाद टिप्पणी:-

- 1 शिवराज्योदयम् - 5/44
- 2 उत्तररामचरितम्- 5/31
- 3 शिवराज्योदयम्- 7/12
- 4 रघुवंश - 2/19
- 5 शिवराज्योदयम् -12 / 50
- 6 किरातार्जुनीयम् - 1/30
- 7 शिवराज्योदयम् - 5/37
- 8 ईशावास्योपनिषद् - 1
- 9 मातृ भूलहरीशतकम् 58
- 10 मनुस्मृति- 2/20
- 11 शिवराज्योदयम्- 62/16
- 12 नाट्यशास्त्र- 1/116
- 13 शिवराज्योदयम् 6/22
- 14 काव्यप्रकाश - 1/2
- 15 ग्रामगीतामृतम् - 33/23, 33/18, 34/43
- 16 गीता - 2 /20, 4/8, 2/22
- 17 ग्राम गीतामृतम् 35/21
- 18 तैत्तिरीयोपनिषद् अनुवाक 11
- 19 स्वातंत्र्यवीरशकातकम् 4
- 20 शिशुपालवधम्- 1/47